वेदके विविध छन्द और छन्दोऽनुशासन-ग्रन्थ

(डॉ० आचार्य श्रीरामकिशोरजी मिश्र)

छन्द वेदके छः अङ्गोंमें एक महत्त्वपूर्ण अङ्ग है। जैसे वेदके अन्य अङ्गों—शिक्षा, कल्प, निरुक्त, व्याकरण और ज्यौतिषका महत्त्व है, वैसे ही छन्दका महत्त्व भी किसी अङ्गसे कम नहीं है। छन्द वेदके चरण हैं[१]। जिस प्रकार चरणरहित व्यक्ति चलनेमें असमर्थ होता है, उसी प्रकार छन्दोरहित वेदकी गति भी नहीं होती। जब छन्दोंका विकास हुआ था, तब उनकी सुरक्षाके लिये छान्दस-आचार्योंने उनपर नियम लिखने प्रारम्भ किये।

ब्राह्मणग्रन्थोंमें छन्दोंके उल्लेखके बाद शांखायन श्रौतसूत्रमें सर्वप्रथम छन्दःशास्त्रीय चर्चा प्राप्त होती है। इस ग्रन्थमें गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पंक्ति, त्रिष्टुप् और जगती नामसे सात छन्दोंका उल्लेख मिलता है। छन्दोंके नामसे पूर्व त्रिपदा, पुरः, ककुभ्, विराट्, सतः, निचृत् और भुरिक् इत्यादि उपनामोंके साथ किन्हीं छन्दोंके पादों और वर्णोंकी गणना भी मिलती है[२]। इसके बाद पातञ्जलनिदानसूत्र, शौनकीय ऋक्प्रातिशाख्य तथा कात्यायनीय ऋक्सर्वानुक्रमणीमें भी उक्त सातों छन्दोंपर विचार किया गया है। कुछ छन्दः-प्रवक्ताओं—ताण्डी, क्रौष्टुकि, यास्क, सैतव, काश्यप, शाकल्य, रात तथा माण्डव्यका नामोल्लेख पिङ्गलीय छन्दःसूत्रमें मिलता है[३], किंतु उनके छन्दःशास्त्रीय ग्रन्थोंका विवरण प्राप्त नहीं होता।

वैदिक युगके प्रारम्भसे वैदिक युगकी समाप्तिक प्रसिद्ध छन्दोंको छान्दस-आचार्योंने पादवर्णनियमोंसे बाँधकर नियन्त्रित किया। प्राचीन संस्कृत वाङ्मयमें छन्दःशास्त्रके अनेक नाम [—छन्दोविचिति, छन्दोनाम, छन्दोभाषा, छन्दोविजिनी, छन्दोविजिति तथा छन्दोव्याख्यान] मिलते हैं[४]। वेदाङ्गोंका उल्लेख प्राचीन ग्रन्थोंमें प्राप्त होता है[५]। पिङ्गलने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ छन्दःसूत्रमें अनेक छन्दः-प्रवक्ताओंका उल्लेख किया है[६]। निदानसूत्र[७] तथा उपनिदानसूत्रमें[८] सात और चार छान्दस-आचार्योंके मतोंका उल्लेख है। पिङ्गलसे पूर्व छन्दःशास्त्रविषयक कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ तो प्राप्त नहीं होता, किंतु पिङ्गलसे पूर्व जिन चार आचार्योंने अपने-अपने ग्रन्थमें छन्दोंपर विचार किया है, उनके नाम हैं—भरत, पतञ्जलि, शौनक और कात्यायन। पिङ्गलने अपने ग्रन्थमें जिन आठ छान्दस-आचार्योंका उल्लेख किया है, उनके छन्दोग्रन्थ तो प्राप्त नहीं होते, किंतु उनके नामसे एक-एक छन्द अवश्य मिलता है, जिनका विवरण अधोलिखित है—

१-क्रौष्टुकिकृत छन्द—स्कन्धोग्रीवी
[छन्दःसूत्रम् ३। २९]

२-यास्ककृत छन्द—उरोबृहती (न्यङ्कुसारिणी)
[छन्दःसूत्रम् ३। ३०]

३-ताण्डिकृत छन्द—सतोबृहती (महाबृहती)
[छन्दःसूत्रम् ३। ३६]

४-सैतवकृत छन्द—विपुलानुष्टुप् और उद्धर्षिणी
[छन्दःसूत्रम् ५। १८, ७। १०]

५-काश्यपकृत छन्द—सिंहोन्नता (वसन्ततिलका)
[छन्दःसूत्रम् ७। ९]

६-शाकल्यकृत छन्द—मधुमाधवी (वसन्ततिलका)
[छन्दःसूत्रम् ७। ११]

७-माण्डव्यकृत छन्द—चण्डवृष्टिप्रपात (दण्डक)
[छन्दःसूत्रम् ७। ३५]

८-रातकृत छन्द—चण्डवृष्टिप्रपात (दण्डक)
[छन्दःसूत्रम् ७। ३६]

१-'छन्दः पादौ तु वेदस्य' (पाणिनीयशिक्षा ४१)।

२-शांखायनश्रौतसूत्रम् (६। ४। ५६, ७२। २२, २५—२८, ७। २७। १२, ३०, १६। २७। २, १६। २८। २)।

३-छन्दःसूत्रम् (६। २९, ३०, ३४, ४। १८, ७। ९, ११, ३३-३४)।

४-पाणिनीयगणपाठः ४। ३। ७३; जैनेन्द्रगणपाठः ३। ३। ४७, जैनशाकटायनगणपाठः ३। १। १३६; चान्द्रगणपाठः ३। १। ४५, गणरत्नमहोदधिः ५। ३४४; सरस्वतीकण्ठाभरणम् ४। ३

५-बौधायनधर्मसूत्रम् २। १४। २; गौतमधर्मसूत्रम् १५। २८, गोपथब्राह्मण १। १। २७; वाल्मीकीयरामायणबालकाण्डम् ७। १५।

६-छन्दःसूत्रम् (३। २९-३०, ३६, ५। १८, ७। ९—११, ३६)।

७-निदानसूत्रम् (१—७ पृष्ठोंपर 'पाङ्क्ताः, एके, उदाहरन्ति, बह्वृचाः आचक्षते, ब्रुवते, प्रतिजानीते' संकेतसे ७ मत)।

८-ज्योतिष्मतीति पाङ्क्ताः, उरोबृहतीति यास्कः, महाबृहतीत्येके, द्विपदाविस्तारपंक्तिस्ताण्डिनः।

इनमेंसे यास्क, काश्यप, ताण्डी और माण्डव्य मूलछन्दः-प्रवक्ता हैं और शेष हैं नामान्तरकर्ता। यास्कके छन्द उरोबृहतीको क्रौष्टुकि स्कन्धोग्रीवी नाम देते हैं और पिङ्गल उसे न्यङ्कुसारिणी कहते हैं। ताण्डीके छन्द सतोबृहतीको पिङ्गलने महाबृहती नाम दिया है। काश्यपके छन्द सिंहोन्नताको शाकल्यने मधुमाधवी नाम दिया है और पिङ्गलने उसे वसन्ततिलका कहा है। माण्डव्य रातसे प्राचीन हैं। अतः चण्डवृष्टिप्रपात (दण्डक) माण्डव्यका है, रातका नहीं। छन्दः-प्रवक्ता ऋषि नामान्तरकर्ता ऋषियोंसे प्राचीन हैं।

छन्दके दो अर्थ हैं—एक तो आच्छादन और दूसरा आह्लादन। छन्दकी व्युत्पत्ति '**छदि संवरणे**' और '**चदि आह्लादने**' से मानी जाती है[1]। यास्कने छन्दकी व्युत्पत्ति '**छद् संवरणे**' से मानी है[2], जिसके अनुसार छन्द वेदोंके आवरण अर्थात् आच्छादन हैं। आच्छादनसे आशय यह है कि छन्दके द्वारा रस, भाव तथा वर्ण्यविषयको आच्छादित किया जाता है। जो विद्वान् छन्दकी व्युत्पत्ति '**चदि आह्लादने**' से मानते हैं,[3] उनके अनुसार आह्लादनका अर्थ मनोरञ्जन होता है अर्थात् छन्द मानव-मनका मनोरञ्जन करते हैं। अतः छन्द वेदोंके आवरण और मानव-मनके आह्लादनके साधन हैं।

वेदोंमें २६ छन्द प्राप्त होते हैं, जिनका विवरण निम्नाङ्कित है—

ऋग्वेदके १३ छन्द

आचार्य शौनकके मतानुसार ऋग्वेदमें गायत्रीसे अतिधृतितक १४ छन्दोंका प्रयोग मिलता है[4], किंतु ऋग्वेदमें किये गये अन्वेषणसे ज्ञात हुआ है कि उसमें गायत्रीसे धृतितक १३ छन्दोंका ही प्रयोग है। अतिधृति छन्दकी अक्षर-गणना तो ऋग्वेदके किसी भी मन्त्रमें प्राप्त नहीं होती। समस्त ऋग्वेदमें केवल एक मन्त्रमें ही अतिधृति छन्द माना जाता है और वह है ऋग्वेदके मण्डल १, सूक्त १२७ वेंका छठा मन्त्र। इसी मन्त्रमें शौनक, कात्यायन और वेंकटमाधवने अतिधृति छन्द माना है, किंतु इसमें अतिधृति छन्दकी वर्ण-संख्या ७६ प्राप्त नहीं होती, अपितु ६८ वर्ण मिलते हैं, जो व्यूहद्वारा भी ७६ रूपमें संगत नहीं होते। एक या दो अक्षरोंसे न्यून छन्दकी वर्णपूर्ति तो व्यूहद्वारा संगत मानी जाती है, किंतु छह वर्णोंकी कमीको व्यूहद्वारा पूरा करना सर्वथा असंगत ही है। अतः ऋग्वेदमें निम्नाङ्कित १३ छन्द प्राप्त होते हैं—

१-गायत्री [२४ वर्ण] (ऋक्० १। १। १)
२-उष्णिक् [२८ वर्ण] (ऋक्० १। ९२। १६)
३-अनुष्टुप् [३२ वर्ण] (ऋक्० १। १०। ७)
४-बृहती [३६ वर्ण] (ऋक्० १। ३६। ७)
५-पंक्ति [४० वर्ण] (ऋक्० ९। ११३। ४)
६-त्रिष्टुप् [४४ वर्ण] (ऋक्० १। २४। १)
७-जगती [४८ वर्ण] (ऋक्० ९। ८४। ४)
८-अतिजगती [५२ वर्ण] (ऋक्० ४। १। २)
९-शक्वरी [५६ वर्ण] (ऋक्० ८। ३६। १)
१०-अतिशक्वरी [६० वर्ण] (ऋक्० १। १३७। १)
११-अष्टि [६४ वर्ण] (ऋक्० १। १२७। १)
१२-अत्यष्टि [६८ वर्ण] (ऋक्० १। १२७। ६)
१३-धृति [७० वर्ण, व्यूहसे ७२] (ऋक्० १। १३३। ६)

यजुर्वेदके ८ छन्द

पद्यके अतिरिक्त गद्य भी प्राचीन आर्ष परम्पराके अनुसार छन्दोबद्ध माने जाते हैं, क्योंकि बिना छन्दके वाणी उच्चरित नहीं होती[5]। छन्दसे रहित कोई शब्द भी नहीं होता और शब्दसे रहित कोई छन्द भी नहीं होता[6]।

१-युधिष्ठिर मीमांसक, वैदिक छन्दोमीमांसा, पृष्ठ ११—१३, अमृतसर १९५९।
२-'छन्दांसि छादनात्' (यास्क, निरुक्त ७। १२)।
३-अयोध्यानाथ, पिङ्गलछन्दःसूत्र २। १ की टिप्पणी।
४-'सर्वादाशतयीष्वेताः, उत्तरास्तु सुभेषजे' (शौनक ऋक्प्रातिशाख्य १६। ८७-८८)।
५-'नाच्छन्दसि वागुच्चरति' (आचार्यदुर्गकृत निरुक्तवृत्तिः ७। २)।
६-'छन्दोहीनो न शब्दोऽस्ति न छन्दः शब्दवर्जितम्' (नाट्यशास्त्रम् १५। ४०)।

सम्पूर्ण वाङ्मय छन्दोयुक्त है और छन्दके बिना कुछ भी नहीं है, जिससे स्पष्ट होता है कि गद्य भी छन्दोबद्ध होते हैं। अतः याजुषगद्यके मन्त्र भी छन्दोबद्ध हैं। यही कारण है कि पतञ्जलि, शौनक और कात्यायन आदि आचार्योंने एक अक्षरसे १०४ अक्षरतकके छन्दोंके विधान अपने-अपने ग्रन्थोंमें किया है, जिनमेंसे गायत्रीसे धृतितक १३ छन्द ऋग्वेदमें प्राप्त हैं और अतिधृतिसे उत्कृतिपर्यन्त ८ छन्दोंके उदाहरण यजुर्वेदमें मिलते हैं, जिनका विवरण निम्नाङ्कित है—

१-अतिधृति[७६ वर्ण] (यजु० २२। ५)
२-कृति [८० वर्ण] (यजु० ९। ३२)
३-प्रकृति [८४ वर्ण] (यजु० १५। १६)
४-आकृति [८८ वर्ण] (यजु० १५। ६४)
५-विकृति [९२ वर्ण] (यजु० १५। १५)
६-संकृति [९६ वर्ण] (यजु० २४। १-२)
७-अभिकृति[१०० वर्ण] (यजु० २६। १)
८-उत्कृति [१०४ वर्ण] (यजु० ११। ५८)

अथर्ववेदके ५ छन्द

१-उक्ता [४ वर्ण] (अथर्व० २। १२९। ८)
२-अत्युक्ता [८ वर्ण] (अथर्व० २। १२९। १)
३-मध्या [१२ वर्ण] (अथर्व० २०। १२९। १३)
४-प्रतिष्ठा [१६ वर्ण] (अथर्व० २०। १३१। ५)
५-सुप्रतिष्ठा [२० वर्ण] (अथर्व० २०। १३४। २)

इनके अतिरिक्त सामवेद और अथर्ववेदमें ऋग्वेद और यजुर्वेदमें प्रयुक्त छन्दोंका ही प्रयोग मिलता है, जिनके २६१ भेद-प्रभेद हैं।

छन्दोऽनुशासन-ग्रन्थ

वैदिक छन्दोंका विवरण तीन प्रकारके छन्दोग्रन्थोंमें प्राप्त होता है, उनमेंसे एक तो वे ग्रन्थ हैं, जो अन्य विषयोंके साथ छन्दोंके विषयोंपर भी विवेचन प्रस्तुत करते हैं। ऐसे ग्रन्थोंमें निदानसूत्र, ऋक्प्रातिशाख्य और अग्निपुराण मुख्य हैं। दूसरे प्रकारके वे ग्रन्थ हैं, जो अनुक्रमणी-साहित्यके अन्तर्गत आते हैं, जिनमें शौनककृत छन्दोऽनुक्रमणी, कात्यायनकृत ऋक्सर्वानुक्रमणी, शुक्लयजुः-सर्वाऽनुक्रमसूत्र, बृहत्सर्वानुक्रमणी, माधवभट्टकृत ऋग्वेदानुक्रमणी और वेंकटमाधवकृत छन्दोऽनुक्रमणी प्रमुख हैं, किंतु इनमेंसे केवल दो ग्रन्थों— कात्यायनकी ऋक्सर्वानुक्रमणी और वेंकटमाधवकी छन्दोऽनुक्रमणीमें ही छन्दोंके लक्षण मिलते हैं। तीसरे प्रकारके वे ग्रन्थ हैं, जो छन्दोंके विषयपर स्वतन्त्ररूपसे लिखे गये हैं, जिनमें छन्दःसूत्र, उपनिदानसूत्र, जयदेवछन्दः और श्रीकृष्णभट्टकृत वृत्तमुक्तावलि मुख्य हैं। अतः इनका सामान्य परिचय यहाँ प्रस्तुत है—

१-निदानसूत्र

निदानसूत्रके रचयिता महर्षि पतञ्जलि हैं। इस ग्रन्थमें १० प्रपाठक हैं और प्रत्येक प्रपाठकमें १३, १३ खण्ड हैं। इसके प्रथम प्रपाठकके प्रथम सात खण्डोंमें छन्दोंका वर्णन प्राप्त होता है। प्रथम छः खण्डोंमें मूल २६ छन्दोंके १४३ भेद-प्रभेदोंके लक्षण मिलते हैं और सप्तम खण्डमें यति-विषयक वर्णन है।

२-ऋक्प्रातिशाख्य

ऋक्प्रातिशाख्यके रचयिता आचार्य शौनक हैं। इसमें १८ पटल हैं, जिनमें अन्तिम तीन १६ से १८ तकके पटलोंमें मूल २६ छन्दोंके १८८ भेद-प्रभेदोंके लक्षण प्राप्त होते हैं, जिनमें आचार्य शौनकके ६४ स्वतन्त्र लक्षित छन्द हैं, शेष १२४ छन्द निदानसूत्रमें लक्षित हो चुके हैं।

३-ऋक्सर्वानुक्रमणी

ऋक्सर्वानुक्रमणीके रचयिता आचार्य कात्यायन हैं। यह सूत्ररूपमें निबद्ध है। इसमें ६८ छन्दोभेदोंके लक्षण मिलते हैं, जिनमें ९ छन्द कात्यायनके स्वतन्त्ररूपसे लक्षित हैं, शेष ५९ छन्द पूर्वरचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

४-छन्दःसूत्र

छन्दःसूत्रके रचयिता महर्षि पिङ्गल हैं। यह सूत्रोंमें उपनिबद्ध है। इसमें ८ अध्याय हैं, जिनमें ३२९ सूत्र हैं। यह ग्रन्थ वैदिक तथा लौकिक छन्दोंका विवेचन करता है। इसमें प्रथमसे चतुर्थ अध्यायके सातवें सूत्रतक ११९ वैदिक छन्दोंके लक्षण मिलते हैं, जिनमें महर्षि पिङ्गलके स्वतन्त्ररूपसे लक्षित ११ छन्द हैं। शेष १०८ छन्द पूर्व-

रचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

५-उपनिदानसूत्र

उपनिदानसूत्रके रचयिता अज्ञात हैं। ग्रन्थके अन्तिम पद्यचतुष्टयके प्रथम पद्यमें पिङ्गलके[1] उल्लेखसे इस रचनाको छन्दःसूत्रसे परवर्ती माना जाता है। इसमें ६६ वैदिक छन्दोभेदोंके लक्षण मिलते हैं, जिनमें उपनिदानकारके स्वतन्त्ररूपसे लक्षित २ छन्द हैं। शेष ६४ छन्द पूर्वरचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

६-अग्निपुराण

अग्निपुराणमें ३८३ अध्याय हैं। इसमें पिङ्गलके[2] उल्लेखसे इस रचनाको छन्दःसूत्रसे परवर्ती माना जाता है। इसके ३२८वें अध्यायसे ३३५वें अध्यायतक ८ अध्यायोंमें छन्दोविवरण प्राप्त होता है, जिनमेंसे प्रथम तीन (३२८—३३०) अध्यायोंमें वैदिक छन्दोंका विवरण है, जिसमें अग्निपुराणकारके स्वतन्त्ररूपसे लक्षित ४ छन्द हैं। शेष छन्द पूर्ववर्ती रचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

७-जयदेवछन्दः

जयदेवछन्दःके रचयिता जयदेव हैं। इसमें ८ अध्याय हैं, जिनमेंसे द्वितीय और तृतीय अध्यायमें वैदिक छन्दोंका विवेचन है, जिसमें जयदेवके १३ स्वतन्त्र लक्षित छन्द हैं। शेष छन्द पूर्ववर्ती छन्दोग्रन्थोंमें लक्षित हो चुके हैं।

८-छन्दोऽनुक्रमणी

छन्दोऽनुक्रमणीके रचयिता वेंकटमाधव हैं। इन्होंने ऋग्वेद-संहितापर भाष्य लिखा है। इस भाष्यमें वैदिक छन्दोंका जो उल्लेख किया है, उसे ही 'छन्दोऽनुक्रमणी' कहते हैं। इसमें ५८ छन्दोभेदोंके लक्षण मिलते हैं, जिनमें इनका कोई भी स्वतन्त्रलक्षित छन्द नहीं है। समस्त छन्द पूर्व-रचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

९-वृत्तमुक्तावलि

वृत्तमुक्तावलिके रचयिता श्रीकृष्णभट्ट हैं। इस रचनामें ३ गुम्फ हैं। प्रथम गुम्फमें २०५ वैदिक छन्दोभेदोंका विवेचन है, जिसमें इनके स्वतन्त्ररूपसे लक्षित ४ छन्द हैं। शेष छन्द पूर्ववर्ती रचनाओंमें लक्षित हो चुके हैं।

उपसंहार

इस प्रकार द्वापरयुगान्तके महर्षि पतञ्जलिकी छन्दोरचना निदानसूत्रसे लेकर विक्रम संवत् १,८०० के श्रीकृष्णभट्टकी छन्दोरचना वृत्तमुक्तावलितक ९ छन्दोऽनुशासन-ग्रन्थोंमें ऋग्वेदके १३, यजुर्वेदके ८ और अथर्ववेदके ५— इस प्रकार कुल २६ वैदिक मूलछन्दोंके लक्षणोंके साथ, उनके २२४ भेद-प्रभेदोंका लक्षणसहित विवेचन किया गया है।

सकल जग हरि कौ रूप निहार।
हरि बिनु बिस्व कतहुँ कोउ नाहीं, मिथ्या भ्रम-संसार॥
अलख-निरंजन, सब जग ब्यापक, सब जग कौ आधार।
नहिं आधार, नाहिं कोउ हरि महँ, केवल हरि-बिस्तार॥
अति समीप, अति दूर, अनोखे, जग महँ, जग तें पार।
पय-घृत, पावक-काष्ठ, बीज महँ तरु-फल-पल्लव-डार॥
तिमि हरि ब्यापक अखिल बिस्व महँ, आनँद पूर्न अपार।
एहि बिधि एक बार निरखत ही भव-बारिधि हो पार॥
(पद-रत्नाकर १२५८)

१-'ब्राह्मणात्ताण्डिनश्चैव पिङ्गलाच्च महात्मनः' (उपनिदानसूत्रम् ८। १)।
२-'छन्दोवक्ष्ये मूलजैस्तैः पिङ्गलोक्तं यथाक्रमम्' (अग्निपुराणम् ३२८। १)।